षट्खंडागम परिशीलन (फोल्डर नं. ००१०१७)

पं. बालचन्द्र शास्त्री

मुख्य टाइटल

समर्पण

प्रधान सम्पादकीय

General Editorial

प्रस्तावना

विषयानुक्रमणिका

षटखण्डागम-पीठीका ---------- १

ग्रन्थनाम और खण्डव्यवस्था ---------- १

ग्रन्थकार ----------३

श्रुतपंचमी की प्रसिद्धि ---------- ६

अर्थकर्ता ---------- ७

ग्रन्थकर्ता ----------८

उत्तरोत्तर- तन्त्रकर्ता ---------- ९

सिद्धान्त का अध्ययन ---------- १०

ईन्द्रनन्दि-श्रुतावतार की विशषता ----------१२

अन्यत्र माधनन्दी का उल्लेख ---------- १४

प्राकृत पट्टावली ---------- १५

प्राकृत पट्टावली की विशेषाएँ ---------- १७

अर्हदवली का शिष्यत्व ----------१८

धरसेनाचार्य व योनिप्राभुत ---------- १९

ग्रन्थ की भाषा ----------२१

विवेचन- पद्धति ---------- ३४

प्रश्नोत्तर शैली ---------- ३४

अनुयोगद्वारों का विभाग ---------- ३५

आघ- आदेश ---------- ३५

चूलिका ---------- ३५

निक्षेप व नय ---------- ३६

सूत्ररचना ---------- ३७

चूर्णिसूत्र ---------- ३८

विभाषा ---------- ३९

कुछ निश्चत शब्दों का प्रयोग ---------- ४०

अनेक शब्दों का उपयोग ---------- ४२

शब्दों की पुनरावृति ---------- ४२

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मूलग्रन्थगत विषय का परिचय

प्रथम खण्ड जीवस्थान ---------- ४४

सत्प्ररुपणा ---------- ४४

द्रव्यप्रमाणानुगम ---------- ४८

क्षेत्रानुगम ---------- ५०

स्पर्शनानुगम ---------- ५१

कालानुगम ---------- ५२

अन्तरानुगम ---------- ५३

भावानुगम ---------- ५४

अल्पबहुत्वानुगम ---------- ५५

जीवस्थान- चूलिका ---------- ५५

प्रकृतिसमुत्कीर्तन ---------- ५६

स्थानसमुत्कीर्तन ---------- ५६

प्रथम दण्डक ---------- ५७

द्वितीय दण्डक ---------- ५७

तृतीय दण्डक ---------- ५७

उत्कृष्ट स्थिति ---------- ५७

जधन्य स्थिति ---------- ५८

सम्यकत्वोत्पत्ति ---------- ५८

गति- आगति ---------- ६०

द्वितीय खण्ड क्षुद्रकबन्ध ---------- ६३

बन्धकसत्व ---------- ६३

एक जीव की अपेक्षा स्वामित्व ---------- ६४

एक जीव की अपेक्षा कालानुगम---------- ६४

एक जीव की अपेक्षा अन्तरानुगम ---------- ६५

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय ---------- ६५

द्रव्यप्रमाणानुम ---------- ६६

क्षेत्रानुगम ---------- ६६

स्पर्शानानुगम ---------- ६७

नाना जीवों की अपेक्षा कालानुगम ---------- ६८

नाना जीवों की अपेक्षा भंगविचय ---------- ६८

भागाभागानुगम---------- ६९

अल्पबहुत्वानुगम ---------- ७०

महादण्डक (चूलिका) ---------- ७१

तृतीय खण्ड बन्धस्वामित्वविचय ---------- ७१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ओघ प्ररुपणा ---------- ७१
आदेशप्ररुपणा ---------- ७२
चतुर्थ खण्ड वेदना ---------- ७२-१०३
कृति अनुयोगद्वार ---------- ७३
वेदना अनुयोगद्वार ---------- ७८
वेदना- निक्षेप ---------- ७९
वेदना नयविभाषणता ---------- ७९
वेदनानामविधान ---------- ७९
वेदनाद्रव्यविधान ---------- ८०
चूलिका ---------- ८४
वेदनाक्षेत्रविधान ---------- ८५
वेदनाकालविधान ---------- ८७
चूलिका १ ---------- ८९
चूलिका २ ---------- ९०
वेदनाभावविधान ---------- ९२
चूलिका १ ---------- ९४
चूलिका २ ---------- ९४
चूलिका ३ ---------- ९५
वेदनाप्रत्ययविधान ---------- ९५
वेदनास्वामित्वविधान ---------- ९६
वेदनावेदनाविधान ---------- ९७
वेदनागतिविधान ---------- ९९
वेदना-अनन्तरविधान ---------- ९९
वेदनासंनिकर्षविधान ---------- ९९
वेदनापरिमाणविधान ---------- १०१
वेदनाभागविधान ---------- १०२
वेदनाअल्पबहुत्व ---------- १०२
पंचम खण्ड वर्गणा ---------- १०३-३५
स्पर्श (३) ---------- १०३
कर्म (४० ---------- १०७
प्रकृति (५) ---------- १०९
बन्धन (६) ---------- ११६
बन्ध ---------- ११७
बन्धक ----------१२१
बन्धनीय (वर्गणा आदि १-८ अनुयोगद्वार)----------१२१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्गणा अनुयोगद्वार में वर्गणानिक्षेप आदि १६ अनु. ----------१२१
वर्गणा के भेद प्रभेद ----------१२१
वर्गणानिक्षेप ---------- १२२
वर्गणानयविभाषणता ---------- १२२
वर्गणादि ८ अनुयोगद्वारगत दूसरे वर्गणाद्रव्यसमुदाहार में.. ---------- १२२
वर्गणाप्ररुपणा में एकप्रदेशिक परमाणुपुदगल वर्गणादि.. ---------- १२२
दूसरे वर्गणानिरुपणा में भेद व भेदसंघात आदि से उत्पन्न होने का विचार ------- १२३
वर्गणाध्रु वाध्रु वानुगम आदि शेष १२ अनुयोगद्वारों की प्ररुपणा.. ---------- १२३
बाह्य वर्गणा में शरीरिशरीरप्ररुपणा आदि ४ अनुयोगद्वार ---------- १२४
शरीरिशरीरीप्ररुपणा---------- १२४
शरीरप्ररुपणा ---------- १२८
शरीरविस्त्रसोपचयप्ररुपणा ----------१३१
विस्त्रसोपचयप्ररुपणा ---------- १३२
चूलिका में निगोद जीवों की उत्पत्ति व मरण आदि का विचार ---------- १३३
षष्ठ खण्ड महाबन्ध ---------- १३५-४२
प्रकृत्तिबन्ध ---------- १३६
स्थितिबन्ध ---------- १३८
अनुभागबन्ध ---------- १३९
प्रदेशबन्ध ---------- १४०
षटखण्डागम की अन्य ग्रन्थों से तुलना
षटखण्डागम व कषायप्राभुत---------- १४३
दोनों ग्रन्थों में समानता ---------- १४४
दोनों ग्रन्थ में विशेषता ---------- १४८
षटखण्डागम व मूलाचार ---------- १५०
दोनों ग्रन्थगत समानता ---------- १५१
उपसंहार ---------- १५९
मूलाचार का कर्तुत्व ---------- १६०
षटखण्डागम और तत्वार्थसूत्र ---------- १६१
दोनों में विषयविवेचन की समानता ---------- १६२
उपसंहार ----------१८१
षटखण्डागम और कर्मप्रकृति ---------- १८३
विषयप्ररुपणा में शब्दार्थगत समानता ---------- १८३
दोनों ग्रन्थगत विशेषता ---------- १९४
षटखण्डागम और सर्वार्थसिद्धी ---------- १९७
स० सि० में की गयी सत्शंख्या आदि सूत्र (१-८) की... ---------- १९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अन्य कुछ उदाहरण ---------- २०४
उपसंहार ---------- २०७
षटखण्डागम और तत्वार्थवार्तिक ---------- २०८
धवलाकार द्वारा त० व ० का तत्वार्थभाष्य के नाम से उल्लेख ---------- २०९
त ० व० के कर्ता द्वारा ष० ख के अन्तर्गत खण्ड व अनुयोगद्वार ... ---------- २०९
दोनों ग्रन्थगत समानता के कुछ उदाहरण ---------- २०९
षटखण्डागम और आचारांग ---------- २२०
प्रास्ताविक ---------- २२०
दोनों ग्रन्थगत मन पर्यय और केवलज्ञान विषयक सन्दर्भों की समानता ---------- २२१
षटखण्डागम और जीवसमास ---------- २२२
प्रास्ताविक ---------- २२२
दोनों ग्रन्थगत समानता व विशेषता ---------- २२३
उपसंहार ---------- २२७
षटखण्डागम और पण्णवणा (प्रज्ञापना) ---------- २२८
पण्णवणा का संक्षिप्त परिचय---------- २२८
दोनों ग्रन्थगत समानता ---------- २३०
दोनों ग्रन्थगत महादण्डक विषयक समानत और विशेषता ---------- २३७
दोनों ग्रन्थगत विशेषता ---------- २४१
दोनों ग्रन्थगत प्रश्नोंत्तरशैली में विशेषता ---------- २४६
षटखण्डागम और प्रज्ञापना में प्राचीन कौन ---------- २४८
उपसंहार ---------- २५७
षटखण्डागम और अनुयोगद्वारसूत्र ---------- २६२
अनुयोगद्वार के रचियता व रचनाकाल ---------- २६२
अनुयोगद्वार में चर्चित विषय का दिग्दर्शन और उसकी.. ---------- २६२
दोनों ग्रन्थों की विशेषता ---------- २६६
ष० ख० मूल में जिसका स्पष्टीकरण नहीं हैं अनुयोगद्वार में.. ---------- २६९
ष० ख० की टीका धवला व अनुयोगद्वार ---------- २७०
धवला में प्ररुपित विषयों की अनुयोगद्वार के साथ समानता ---------- २७०
उपसंहार ---------- २७५
षटखण्डागम और नन्दिसूत्र ---------- २७७
नन्दिसूत्र में मंगलपूर्वक स्थविरावली का क्रमनिर्देश ---------- २७७
दोनों ग्रन्थों में प्ररुपित ज्ञानावरणीय और ज्ञानाविषयक समानता ---------- २७७
अन्य ज्ञातव्य ---------- २८३
षटखण्डागम (धवला) और दि. पंचसंग्रह ---------- २८४
पं० सं० का प्रथम प्रकरण जीवमास व ष० ख० का जीवस्थान खड ---------- २८५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धवला में उदधुत गाथाएँ प्रचुर संख्या में पंचसंग्रह में उपलब्ध ---------- २८५
क्या प्रस्तुत पंचसंग्रह धवलाकार के समक्ष रहा हैं ---------- २९०
पंचसंग्रह के अन्य प्रकरणों में भी धवला की समानता ---------- २९४
विशेषता ---------- २९५
विशेष प्ररुपणा ---------- २९९
षटखण्डागम और गोम्मटसार ---------- ३००
जीवकाण्ड ---------- ३०१
मूलाचार ---------- ३१२
तत्वार्थवार्तिक ---------- ३१३
ग्रन्थान्तर ---------- ३१८
बीस प्ररुपणाओं का अन्तर्भाव ---------- ३१९
अन्यत्र से ग्रन्थ में आत्मसात की गयी गाथाओं की अनुक्रमणिका ---------- ३२०
कर्मकाण्ड ---------- ३२४
उपसंहार ---------- ३३६
षटखण्डागम एर टीकाएँ
पद्मनन्दि विरचित परिकर्म ---------- ३३७
शामकुण्डकृत पद्धति ---------- ३४०
तुम्बुलूराचार्य कृत चूडामणि ---------- ३४०
समन्तभद्र विरचित टीका ---------- ३४१
वप्पदेव विरचित व्याख्या ---------- ३४२
आ० वीरसेन विरचित धवला टीका ---------- ३४४
विचारणीय समस्या ---------- ३४५
आचार्य वीरसेन और उनकी धवला टीका---------- ३४८-६३
गुरु आदि का उल्लेख तथा रचनाकाल ---------- ३४८
विरसेन का व्यक्तित्व ---------- ३५०
सिद्धान्तपारिगामिता ---------- ३५०
ज्योतिर्वित्व ---------- ३५१
गणिज्ञता ---------- ३५२
व्याकरणपटुता ---------- ३५४
न्यायनिपुणता ---------- ३५८
काव्यप्रतिभा ---------- ३६३
धवलागत विषय का परिचय
प्रथम खण्ड जीवस्थान सत्प्ररुपणा ---------- ३६४
मंगल आदि छह अधिकार ---------- ३६५
मंगल, मंगलकर्ता आदि अन्य छह अधिकार ---------- ३६७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

निमित्त का प्रकारान्तर से भी निर्देश ---------- ३६७
कर्ता अर्थकर्ता व ग्रन्थकर्ता ---------- ३६७
षटखण्डागम की रचना कैसे हुई ---------- ३६८
जीवस्थान का अवतार (आनुपूर्वी नाम प्रमाण वक्तव्यता व अर्थाधिकार) ---------- ३६९
निक्षेप नय व अनुगम ---------- ३७०
भावप्रमाण के ५ भेदों में श्रुतभेद ---------- ३७२
जीवस्थानगत चूलिकाओं का उदगम ---------- ३७४
दर्शनविषयक विचार ---------- ३७६
उपशामन क्षपणविधि ---------- ३८१
आलाप (बीस प्ररुपणाएँ) ---------- ३८५
द्रव्यप्रमाणानगम (द्रव्यप्रमाण के साथ लोक आदि की प्रासंगिक चर्चा) ---------- ३८८
क्षेत्रानुगम में लोकस्थिति का विचार ---------- ४०१
स्पर्शनानुगम (आ० वीरसेन द्वारा स्वयम्भूरमण समुद्र के आगे भी.. ---------- ४०८
कालानुगम (दिन व रात्रि के १५-१५ मुहूर्तो का उल्लेख) ---------- ४१२
अन्तरानुगम ---------- ४१९
भावानुगम ---------- ४२१
अल्पबहुत्वानुगम ---------- ४२७
जीवस्थान- चूलिका (प्रकृतिसमुत्कीर्तन आदि नौ चूलिकाएँ)---------- ४२८
प्रकृतिसमुत्कीर्तन ---------- ४२९
स्थानसमुत्कीर्तन ---------- ४३०
(३-५) तीन दण्डक ---------- ४३०
उत्कृष्ट स्थिति ---------- ४३१
जधन्य स्थिति ---------- ४३२
सम्यकत्वोत्पत्ति ---------- ४३३
गति- आगति ---------- ४४७
द्वितीयखण्ड क्षुद्रकबन्ध---------- ४४७
बन्धकसत्व व अन्तिम महादण्डक के साथ एक जीव की अपेक्षा... ---------- ४४७
चूलिका महादण्डक ---------- ४५२
तृतीय खण्ड बन्धस्वामित्वविचय ---------- ४५२
बन्धस्वामित्व का उदगम व उसका स्पष्टीकरण ---------- ४५२
स्वोदय- परोदयबन्ध आदि विषयक २३ प्रश्न ---------- ४५३
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक- अबन्धक ---------- ४५५
तीर्थंकर प्रकृति के बन्धक कारण ---------- ४५६
चतुर्थ खण्ड वेदना
कृति अनुयोगद्वार ---------- ४५८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विस्तुत मंगल के प्रसंग में जिन आदि का विचार ---------- ४५९
अर्थकर्ता महावीर के प्रसंग में उनकी द्रव्य- क्षेत्र आदि से प्ररुपणा ---------- ४६१
आयुविषयक मतभेद ---------- ४६३
ग्रन्थकर्ता गणधर ---------- ४६४
दिव्यध्वनि विषयक विचार ---------- ४६५
गौतम गणधर
उत्तरोत्तर तन्त्रकर्ता व पूर्वश्रुत से सम्बन्ध ---------- ४६७
कृतिविषयक प्ररुपणा के प्रसंग में स्वाध्यायविधि का विशेष विचार ---------- ४७१
गणनाकृति के प्रसंग में गणितभेद आदि---------- ४७२
करणकृति का विचार ---------- ४७५
वेदना अनुयोगद्वार ---------- ४७७
वेदना- निक्षेप ---------- ४७७
वेदनानयविभाषणता ---------- ४७८
वेदनानामविधान ---------- ४७८
वेदनाद्रव्यविधान ---------- ४७८
पदमीमांसा आदि तीन अनुयोगद्वार ---------- ४७८
उत्कृष्ट- अनुत्कृष्ट ज्ञानावरण द्रव्यवेदना का स्वामी ---------- ४८०
आयु के बिना अन्य छह कर्मों की द्रव्यवेदना ---------- ४८१
आयु की उत्कृष्ट द्रव्यवेदना ---------- ४८३
ज्ञानावरण आदि की जधन्य- अजन्य द्रव्यवेदना ---------- ४८४
वेदनाद्रव्यविधान से सम्बन्ध चूलिका ---------- ४८४
योगप्ररुपणा ---------- ४८५
वेदनाक्षेत्रविधान
पदमीमांसादि तीन अनुयोगद्वार ---------- ४८६
क्षेत्र की अपेक्षा ज्ञानावरण की उत्कृष्ट अनुकृष्ट वेदना ---------- ४८६
वेदनीय की अनुत्कृष्ट एवं ज्ञानावरणीय की जधन्य क्षेत्रवेदना ---------- ४८८
वेदनाकालविधान
ज्ञानावरण की उत्कृष्ट अनुत्कृष्ट कालवेदना ---------- ४९०
वेदनाकालविधान से सम्बद्ध चूलिका- १ ---------- ४९०
स्थितिबन्धस्थान प्ररुपणादि ४ अनुयोगद्वार ---------- ४९०
वेदनाकालविधान से सम्बद्ध चूलिका २ ---------- ४९०
वेदनाभावविधान ---------- ४९२
वेदनाभावविधान चूलिका १ ---------- ४९३
वेदनाभावविधान चूलिका २ ---------- ४९५
वेदनाप्रत्ययविधान ---------- ४९५

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वेदनास्वामित्वविधान ---------- ४९५
वेदनावेदनाविधान ---------- ४९६
वेदनागतिविधान ---------- ४९७
वेदनाअन्तरविधान ---------- ४९९
वेदनासंनिकर्षविधान ---------- ५००
वेदनापरिमाणविधान ---------- ५०१
वेदनाभागाभागविधान ---------- ५०४
वेदनाअल्पबहुत्वविधान ---------- ५०५
पंचम खण्ड वर्गणा
स्पर्शअनुयोगद्वार (१३ प्रकार के स्पर्श का विवेचन) ---------- ५०५
कर्मअनुयोगद्वार (१० प्रकार के कर्म का विचार) ---------- ५०८
तप कर्म के प्रसंग में दस प्रकार का प्रायश्चित ---------- ५०९
तप कर्म के प्रसंग में चार अधिकारों में ध्यानविषयक विचार ---------- ५११
क्रियाकर्म (कृतिकर्म या वन्दना) ---------- ५१९
कर्मअनुयोगद्वार में प्रसंगप्राप्त एक शंका का समाधान ---------- ५२१
प्रकृतिअनुयोगद्वार
मूल उत्तर प्रकृतियों के प्रसंग में पाँच ज्ञान आदि का विवेचन ---------- ५२२
बन्धन अनुयोगद्वार
तेईस वर्णणाओं में प्रत्येकशरीर-द्रव्यवर्गणा पर विशेष प्रकाश---------- ५२४
बादरनिगोदवर्गणा ---------- ५२६
सूक्ष्मनिगोदवर्गणा ---------- ५२७
बाह्यवर्गणा के प्रसंग में चार अनुयोगद्वार (१) शरीरिशरीर प्ररुपणा (२)
शरीरप्ररुपणा (३) शरीरविस्त्रसोपचय प्ररुपणा और विस्त्रसोपचयप्ररुपणा ---------- ५२९
आहारक व तैजस शरीर---------- ५३०
मूल ग्रन्थकार द्वारा अप्ररुपित शेष १८ अनुयोगद्वार ---------- ५३२
निबन्धन अनुयोगद्वार ---------- ५३३
प्रत्रम अनुयोगद्वार (प्रसंगप्राप्त चर्चा के साथ पत्रमभेद) ---------- ५३५
उपक्रम अनुयोगद्वार ---------- ५३८
उपशामनोपक्रम के प्रसंग में उपासना के भेद प्रभेद ---------- ५४१
उदयअनुयोगद्वार ---------- ५४४
मोक्ष अनुयोगद्वार ---------- ५४६
संक्रम अनुयोगद्वार ---------- ५४६
लेश्याअनुयोगद्वार ---------- ५४९
लेश्याकर्म अनुयोगद्वार ---------- ५५१
लेश्यापरिणाम अनुयोगद्वार ---------- ५५१

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सात- सात अनुयोगद्वार ---------- ५५२
दीर्घ- ह्रस्व अनुयोगद्वार ---------- ५५३
भवधारणीय अनुयोगद्वार ---------- ५५३
निधत- अनिधत अनुयोगद्वार ---------- ५५४
निकाचित अनिकाचित अनुयोगद्वार ---------- ५५४
कर्मस्थिति अनुयोगद्वार ---------- ५५५
पश्चिमस्कन्ध अनुयोगद्वार ---------- ५५५
अल्पबहुत्व अनुयोगद्वार ---------- ५५७
संतकम्मपंजिया (सत्कर्मपंजिका)
परिचय ---------- ५६१
उत्थानिका ---------- ५६२
अर्थविवरण पद्धति ---------- ५६२
संतकम्मपाहुड ---------- ५६३
सैद्धान्तिक ज्ञान ---------- ५६५
ग्रन्थोल्लेख
आचारांग ---------- ५७२
उच्चारणा ---------- ५७२
कर्मप्रवाद ---------- ५७३
करणाणिओगसुत ---------- ५७४
कसायपाहुड ---------- ५७४
उपसंहार ---------- ५८२
मूलकषायप्राभूत ---------- ५८३
छेदसुत्त ---------- ५८५
जीवसमास ---------- ५८५
जोणिपाहुड ---------- ५८५
णिरयाउबन्धसुत्त ---------- ५८५
तत्त्वार्थसूत्र ---------- ५८६
तत्त्वार्थभाष्य ---------- ५८७
तिलोयपण्णत्तिसुत्त ---------- ५८७
परियम्म ---------- ५८९
पंचत्थिपाहुड ---------- ५९५
पिंडिया ---------- ५९६
पेज्जदोसपाहुड ---------- ५९६
महाकम्मपयडिपाहुड ---------- ५९६
मूलतन्त्र ---------- ५९८

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वियाहपण्णत्तिसुत्त ---------- ५९९
सम्मइसुत्त ---------- ६००
संतकम्मपयडिपाहुड ---------- ६०३
संतकम्मपाहुड ---------- ६०५
सारसंग्रह ---------- ६०५
सिद्धिविनिश्चय ---------- ६०६
सुत्तपोत्थय ---------- ६०६
षट्खण्डागम के अन्तर्गत खण्ड व अनुयोगद्वार आदि अनिर्दिष्टनामग्रन्थ
अनुयोगद्वार ---------- ६०९
आचारांगनिर्युक्ति ---------- ६१०
आप्तमीमांसा ---------- ६१२
आवश्यकनिर्युक्ति---------- ६१३
उत्तराध्ययन ---------- ६१४
कसायपाहुड ---------- ६१४
गोम्मटसार---------- ६१४
टाकिच्कर्काडॉच ---------- ६१४
जंबूदीवपण्णत्तिसंगहो ---------- ६१४
जीवसमास ---------- ६१५
तत्त्वार्थवार्तिक ---------- ६१५
तत्त्वार्थसूत्र ---------- ६१६
तिलोयपण्णत्त ---------- ६१६
दशवैकालिकी ---------- ६२६
धनंजयनाममाला ---------- ६२९
ध्यानशतक ---------- ६२९
नन्दिसूत्र ---------- ६३४
पंचास्तिकाय ---------- ६३४
प्रज्ञापना ---------- ६३४
प्रमाणवार्तिक ---------- ६३४
प्रवचनसार ---------- ६३४
भगवतीआराधना---------- ६३५
भावप्राभृत ---------- ६३७
मूलाचार ---------- ६३७
युक्त्यनुशासन ---------- ६३९
लघीयस्त्रय ---------- ६३९
लोकविभाग ---------- ६३९

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

विशेषावश्यकभाष्य ---------- ६४१
सन्मतिसूत्र ---------- ६४२
सर्वार्थसिद्धि ---------- ६४२
सौन्दरानन्दमहाकाव्य ---------- ६४३
स्थानांग ---------- ६४३
स्वयम्भूस्तोत्र ---------- ६४३
हरिवंशपुराण ---------- ६४४
ग्रन्थकारोल्लेख
आर्यनन्दी ---------- ६४६
आर्यमंक्षु और नागहस्ती ---------- ६४७
उच्चारणाचार्य ---------- ६५५
एलाचार्य ---------- ६५६
गिद्धपिच्छाइरिय ---------- ६५६
गुणधरभट्टारक ---------- ६६८
गौतमस्वामी ---------- ६७४
धरसेनाचार्य ---------- ६७६
नागहस्ती क्षमाश्रमण ---------- ६७६
निक्षेपाचार्य ---------- ६७६
पुष्पदन्त ---------- ६७६
पूज्यपाद ---------- ६८१
प्रभाचन्द्र ---------- ६८५
भूतबलि ---------- ६८५
महावचक क्षमाश्रमण ---------- ६८५
यतिवृषभ ---------- ६८६
व्याख्यानाचार्य ---------- ६८७
आचार्य समन्तभद्र ---------- ६८८
सूत्राचार्य ---------- ६९६
सेचीय व्याख्यानाचार्य---------- ६९७
वीरसेनाचार्य की व्याख्यान-पद्धति
वीरसेनाचार्य की प्रामाणिकता---------- ६९८
सूत्र-प्रतिष्ठा (पुनरुक्ति दोष का निराकरण) ---------- ७००
सूत्र-सूचित विषय की अप्ररूपणा ---------- ७०३
सूत्र-विरुद्ध व्याख्यान का निषेध ---------- ७०७
परस्पर-विरुद्ध सूत्रों के सद्भाव में धवलाकार का दृष्टिकोण ---------- ७०९
सूत्र के अभाव में आचार्य-परम्परागत उपदेश व गुरु के उपदेश को महत्त्व ---------- ७१७

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आचार्य-परम्परागत उपदेश और गुरूपदेश (तालिका) ---------- ७२२
सूत्राभाव ---------- ७२३
दक्षिण-उत्तर प्रतिपत्ति व पवाइज्जंत-अपवाइज्जंत उपदेश ---------- ७२४
स्वतन्त्र अभिप्राय---------- ७२७
देशामर्शक सूत्र आदि ---------- ७३४
सूत्र-असूत्र विचार ---------- ७३७
उपदेश के अभाव में प्रसंगप्राप्त विषय की अप्ररूपणा ---------- ७४०
उपदेश प्राप्त कर जान लेने की प्रेरणा ---------- ७४१
अवतरण वाक्य
अनुक्रमणिका---------- ७४३-७७०
परिशिष्ट
परिशिष्ट-१ –विषयपरिचयाक तालिका
कर्मप्रकृतियाँ और उनकी उत्कृष्ट जघन्य स्थिति आदि ---------- ७७
नरकादि गतियों में सम्यक्त्वोत्पत्ति के बाह्य कारण ---------- ७७६
चारों गतियों में गुणस्थान विशेष से सम्बन्धित प्रवेश और निर्गमन ---------- ७७७
कौन जीव किस गति से किस गति में जाता-आता है ---------- ७७८
ज्ञानादिगुणोत्पादन तालिका ---------- ७८०
बन्धोदय तालिका ---------- ७८१
कर्मबन्धप्रत्यय तालिका ---------- ७८४
परिशिष्ट-२ – मूल षट्खण्डागम के अन्तर्गत गाथासूत्र ---------- ७८५
परिशिष्ट-३ – षट्खण्डागम मूलगत पारिभाषिक शब्दानुक्रमणिका ---------- ७८८
परिशिष्ट-४ – ज्ञानावरणादि के बन्धक प्रत्यय---------- ८३९
परिशिष्ट-५ – धवलान्तर्गत ऐतिहासिक नाम ---------- ८४०
परिशिष्ट-६ – भौगोलिक शब्द ---------- ८४५
परिशिष्ट-७ – षट्खण्डागम सूत्र व धवला टीका के सोलहों भागों की सम्मिलित
पारिभाषिक शब्द सूची ---------- ८४७
षट्खण्डागम-परिशीलन में प्रयुक्त ग्रन्थों की सूची---------- ९०९
शुद्धि-पत्र ---------- ९१३

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org